SEMESTER – III

(Social and Political dynamics of Democracy)

CC – 07

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content V

- Unit – III : Topic
  - A. Veer kunwar Singh.

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

कुंवर सिंह जनकल्याणकारी व्यक्ति तथा महान निर्माता के रूप में

कुंवर सिंह ने अपने पिता साहबजादा सिंह की 1826 ई0 में मृत्यु के पश्चात् अपने रियासत की बागडोर संभाली। उन्होंने 1856 ई0 तक जगदीशपुर को हर तरह से सुखी सम्पन्न बनाने का प्रयास किया। अपने परदादा उद्वन्त सिंह की तरह उन्होंने भी जगदीशपुर को व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। उन्होंने बहुत से जन कल्याणकारी कार्य भी किये। निश्चित रूप से उन्हें शिकार एवं घुड़सवारी का शौक था। जंगल की हिफाजत करने, पेड़–पौधे उगाने एवं बाग–बगीचा लगाने में उनकी विशेष रूचि थी। उन्होंने जगह–जगह कुएँ खुदवाये, पाठशाला एवं मकखतव बनवाये।

वीर कुंवर सिंह महान् निर्माता थे। जगदीशपुर में एक भव्य शिव मंदिर बनवाया। अपनी सहचरी धरमन बीबी के लिए उन्होंने आरा, जगदीशपुर और बीबीगंज में मस्जिदें बनवायीं। निश्चित रूप से अपनी सदाशयता एवं जनकल्याण की भावना के कारण उनकी आर्थिक स्थिति दिन–ब–दिन लचर होती गई और 1838 ई0 में वे ऋण के बोझ से दब गये। कुल देनदारी करीब 17 लाख रूपये की हो गयी। कुछ इतिहासकारों ने उनकी आर्थिक बदहाली के मूल में उनकी शाह खर्च तबीयत एवं उनके द्वारा एशो–आराम की जिन्दगी बिताना माना है। यह गलत है। अतिशय उदारता एवं अपने रैयतों पर जोर–जुल्म नहीं करना उसका प्रमुख कारण था। उन्होंने बनारस में पेशवा के परिवार के लोगों से कर्ज लेकर ऋण चुकाने की बात सोची और अंग्रेज शासक से आग्रह किया कि वे मुचलिका की भूमिका निभाये। लेकिन स्थानीय सूदखोरों एवं महाजनों के दबाब में आकर अंग्रेज अधिकारी

ऐसा नहीं कर सके। निश्चित तौर पर वीर कुंवर सिंह इससे मर्माहत हुए। ये कहना गलत है कि अंग्रेज अधिकारी ने उन्हें कर्ज देने से इंकार किया और कुंवर सिंह बागी हो गये। कुंवर सिंह के बागी होने का वास्तविक कारण यह नहीं था। कारण था उनके रियासत की स्थिति का दयनीय होना। वे जनसाधारण के साथ शुरू से ही जुड़े हुए थे, और जन साधारण उन्हें अपना रक्षक मानता था। वे एक धर्म निरपेक्ष व्यक्ति थे। उनकी सरकार में ब्राह्मण, ग्वाला, माली, मुसलमान, कायस्थ एवं राजपूत जाति के लोग थे। उनकी सेना में सूबेदार रंजित राय काफी ऊँचे पर पर कार्यरत थे, जो जाति के ग्वाला थे। वे किसान, मजदूर और दलित–उत्पीड़ित तथा वंचित तबकों के लोगों के रहनुमा थे और उनके हक के लिए लड़ने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। जिस समय युवावस्था में वे शिकार खेलने जाते थे, उस समय उनके निम्नजातीय मित्र भी उनके साथ होते थे। यही समय था जब उन्हें निम्नजातीय लोगों के दु:ख दर्द को समझने का मौका मिला। अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोही होने का यह मूल कारण था।

उपयोगी पुस्तकें :–

1. के. के. दत्त, बिहार में स्वातंत्र्य संघर्ष का इतिहास
2. प्रमोदानन्द दास, कुमार अमरेन्द्र, बिहार इतिहास एवं संस्कृति